महाराजा विजयसिंह (जोधपुर राज्य) और वल्लभ सम्प्रदाय

द्विवंकल शर्मा
सह आचार्य, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु

शोध सारांश

जोधपुर राज्य में वल्लभ सम्प्रदाय के उत्कर्ष ने राज्य के राजनैतिक, सामाजिक जीवन और उस समय की कला और संस्कृति को भी प्रभावित किया था। जोधपुर के तत्कालीन शासक महाराजा विजयसिंह ने विधिवत रूप से वल्लभ सम्प्रदाय की दीक्षा ग्रहण कर जोधपुर में वल्लभ सम्प्रदाय के उत्कर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाराजा की इस सम्प्रदाय को संरक्षण की नीति से प्रेरित होकर विभिन्न जातियों के लोग इससे दीक्षित होने लगे फलस्वरूप वल्लभ सम्प्रदाय की जनप्रियता में वृद्धि हुई। उस सम्प्रदाय के विकसित लोगों का नैतिक जीवन उच्च हुआ। इस सम्प्रदाय के प्रभाव से तत्कालीन कला और साहित्य भी पल्लवित हुआ।

संकेताक्षर : *सम्प्रदाय, जीर्णोद्धार, श्री नाथ जी, गुसांई, झांकी, कृष्णलीला, महाराजा विजयसिंह, वल्लभ सम्प्रदाय।*

जोधपुर राज्य में धर्म का प्रभाव प्रायः सदैव ही रहा है। 18वीं सदी में वल्लभ सम्प्रदाय के उत्कर्ष ने राज्य के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन तथा उस काल की सभ्यता और संस्कृति को पूर्णतः प्रभावित किया। जोधपुर का तत्कालीन शासक महाराजा विजयसिंह (1752-92) एक धर्म परायण शासक था। आरम्भ में वह निरंकारी सम्प्रदाय का अनुयायी था और उस पर निरंकरी साधु आत्माराम का प्रभाव था। वह राज्य का प्रशासन उसी के परामर्श से संचालित करता था। सन् 1760 में आत्माराम की मृत्यु हो गई। आत्माराम की मृत्यु के बाद महाराजा पर गुसांईयों का प्रभाव बढ़ने लगा। परिणामस्वरूप सन् 1762 में उसने विधिवत्रूप से वल्लभ सम्प्रदाय की दीक्षा ग्रहण कर ली। इस अवसर पर महाराजा ने चौपासनी के गुसांई आचार्य मुरलीधर को अपना धर्मगुरू बनाया तथा जोधपुर शहर में बालकृष्णजी, मदनमोहनजी, महाप्रभुजी, मुरलीमनोहरजी, नटवरजी और नवनीत बिहारीजी के मन्दिर बनवाये। उसने जूनीमण्डी स्थित गंगश्यामजी के मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया। इसी समय महाराजा की पासवान गुलाबराय ने कटला बाजार स्थित कुंजबिहारीजी के मन्दिर को बनवाया। महाराजा विजयसिंह ने इन मन्दिरों में अपने इष्टदेव की स्थापना करवा कर, उनकी नियमित रूप से सेवाएं आरम्भ करवाई। वह स्वयं प्रतिदिन प्रातःकाल और सांयकाल इन मन्दिरों में दर्शन के लिए जाता था।

वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित हो जाने के बाद महाराजा ने राज्य में मांस और मदिरा के प्रयोग पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगा दिया। उन्होंने इस आज्ञा का कठोरता से पालन करने पर बल दिया। इस आज्ञा की अवहेलना करने वालों को कठोर दण्ड दिया। महाराजा ने आदेश का उल्लंघ करने पर आसोप के ठाकुर से पूछताछ की तथा आऊवा के ठाकुर जैतसिंह द्वारा पशुवध करने पर, उसे जोधपुर दुर्ग में बुलाकर उसकी हत्या कर दी। उपरान्त दुर्ग के निकट सिंगोड़ियों की खरी के पास उसका दाहसंस्कार करवा कर, उसकी समाधि पर एक चबूतरा बनवाया। यही नहीं, उन्होंने राजकीय ना के एक मुस्लिम सैनिक द्वारा एक बैल को शस्त्र से जख्मी करने पर उसको कैद कर कठोर दण्ड दिया।

हाराजा ने अपने शासनकाल में गुसांईयों को विभिन्न प्रकार की भेटें, नकद अनुदान और अनेक गांव दान में दिये। ने मूंदियाड़ गांव द्वारिका के रणछोड़राय मन्दिर को, पुनियावास गांव जगन्नाथराय मन्दिर को, मालावास और ईल के गांव बालकृष्ण मन्दिर को, लालण खुर्द गांव चौपासनी मन्दिर को तथा खारड़ा मेवास का गांव गुसाईयों को

ISSN 2277-5587

दान में दिये। यहीं नहीं उन्होंने शेखावासनी थाटी, जारोडो, इटावा, देवली ठीकरीया. अखेपुरी, जारोडा खुर्द आदि अनेक गांव श्रीनाथजी के मन्दिर को दान में दिये।

महाराजा विजयसिंह ने जोधपुर राज्य में श्रीनाथजी की गायों को स्वतन्त्रतापूर्वक घूमने की अनुमति प्रदान की। राज्य की ओर से गायों को घास, खल तथा अनाज मुफ्त में देने की व्यवस्था की तथा सन् 1765 में गायों की चराई पर लगने वाले घासमारी कर को बन्द कर दिया और राजकोष की क्षतिपूर्ति के लिए जागीरदारों पर रेखबाब नामक नया कर लगाया।

महाराजा ने नाथद्वारा स्थित श्रीनाथजी के मन्दिर को विभिन्न अवसरों पर भेंट आदि चढ़ाने के लिए नाथद्वारा में एक भण्डार स्थापित किया। इसके संचालन हेतु एक पोतेदार, एक तबीनदार और दो नवीस नियुक्त किये। महाराजा ने नाथद्वारा में श्रीनाथजी के पूजन के लिए प्रतिदिन गुलाब के फूल नाथद्वारा भेजने का प्रबन्ध किया। इस कार्य हेतु कई कर्मचारी नियुक्त किये गये तथा पुष्कर, मेड़ता. जोधपुर, सोजत, घाणेराव में फूलडाक की चौकियाँ स्थापित की। पश्चात् दसूरी में गुलाब का स्थाई बाग लगाने के आदेश दिये।

महाराजा ने जोधपुर स्थित सभी पुष्टिमार्गीय मन्दिरों के अतिरिक्त कोटा स्थित मथुरेश मन्दिर में भजन गाने के लिए कीर्तनियों, पदगायकों और पखावजवादकों की नियुक्ति की। सन् 1786 में कांकरोली स्थित द्वारकाधीश मन्दिर की रक्षार्थ सरदारमल तथा सन् 1790 में फतेहराम और दरोगा लिखमारम परिहार को नियुक्त किया गया। महाराजा स्वयं अनेक बार नाथद्वारा मे श्रीनाथजी के दर्शन को गये थे।

महाराजा के इस सम्प्रदाय के प्रति संरक्षण नीति से प्रेरित होकर विभिन्न जातियों और सम्प्रदायों के लोग इस सम्प्रदाय में दीक्षित हुए। इस समय राजपूत, जैन, ब्राह्मण, गुर्जर, भाटी, पुरोहित, सोनी, सांचोरी और माहेश्वरी जाति के अनेक लोगों ने गोस्वामियों से दीक्षा ग्रहण की। फलस्वरूप वल्लभ सम्प्रदाय की व्यापकता और जनप्रियता में वृद्धि हुई तथा वल्लभ गुसांईयों के प्रभाव के कारण समाज में श्वेत रंग के वस्त्र लोकप्रिय हो गये।

वल्लभ मन्दिरों में दैनिक पूजापाठ पुष्टिमार्गी परिपाटी के अनुसार होती थी। यहाँ भगवान के दर्शन हर वक्त नहीं होते अपितु एक निश्चित समय पर होते थे, जिसे झाँकी कहते थे। प्रातःकाल से शयन तक मंगला, श्रृंगार, राजभोग, उत्थापनभोग, संध्याआरती और शयन आदि क्रियाएँ होती थी। इसके कारण वल्लभ अनुयायिओं का दैनिक जीवन सुव्यवस्थित तथा क्रमबद्ध हो गया। समाज में आन्तरिक शुद्धि, वाक्संयम, शारीरिक शौच, मानसिक शुद्धता और मांस मदिरा के निषेध पर बल दिया गया। इस समय समाज में त्याग, संयम, साधु संगति, हरिस्मरण के बल ने सगुण भक्ति की भावना को विकसित किया।

इस सम्प्रदाय के उत्कर्ष ने आर्थिक व्यवस्था को भी प्रभावित किया। पशुवध निषेध और पशु चराई पर लगाने वाले घासमारी कर को समाप्त कर देने से राज्य में पशुपालन व्यवसाय विकसित हुआ। इसी प्रकार महाराजा द्वारा पुष्पडाक चौकियाँ स्थापित करने, वल्लभ मन्दिरों में सेवक और कीर्तनियों की नियुक्ति करने से प्रजा को रोजगार प्राप्त हुआ। मन्दिरों और गुसाईयों को अनेक गांव दान में देने से सांसण भूमि का विकास हुआ। किन्तु बहुमूल्य उपहार, दान-दक्षिणा और गुसाईयों को अपार धन देने से राजकोष प्रभावित हुआ। अतः राजकोष की पूर्ति के लिए जागीरदारों पर नये कर लगाये गये। महाराजा ने रेखबाब नामक नया कर लगाया। इससे सामन्तों और प्रजा में असन्तोष बढ़ गया।

इस समय राज्य में कतिपय व्यावसायिक श्रेणियों का गठन भी हुआ। राज्य में मांस विक्रय पर रोक लग जाने के कारण इस व्यवसाय में लगे लोग बेरोजगार हो गए। महाराजा ने इन लोगों को मकान की छतों पर पट्टियां चढ़ाने का एकाधिकार दिया। इन व्यावसायियों का संगठन चवालियाँ कहलाया।

जोधपुर राज्य में वल्लभ सम्प्रदय का उत्कर्ष कला और साहित्य के विकास की दृष्टि से भी उपयोगी रहा। इस समय राज्य में अनेक वैष्णव देवालयों, राजप्रसादों स्मारकों, बावड़ियों, कुओं, उद्यानों तथा समाधियों का निर्माण हुआ। अनेक मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाय गया। जोधपुर नगर में बालकृष्णजी, मदनमोहनजी महाप्रभुजी, मुरलीमनोहरजी, नटवरजी, नवनी बिहारीजी के मन्दिरो का निर्माण हुआ। गंगश्यामजी मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया गया। श्री दाऊजी विशाल नये मन्दिर का निर्माण भी कराया गया।

महाराजा विजयसिंह की पासवान, गुलाबराय ने कव बाजार में कुंजबिहारीजी का भव्य एवं कलात्मक मं बनवाया। यह मन्दिर अपने नयनाभिराम, शि

सौन्दर्य एवं भव्यता के लिए सुविख्यात है। यह देवालय दुर्ग के समान ऊंचा और भव्य है। इसका प्रवेश द्वार ऊंची उठान का आन्तरिक द्वार है। इसमें खुला विशाल चौक और ऊंचा एवं भव्य जगमोहन (मण्डप) है। मन्दिर में प्रवेश द्वार पर उत्तर पाषाण शैली के अनुरूप लाल पत्थर का तोरण द्वार है। तोरण पूर्णरूप से अलंकृत है। इसके दोनों ओर पत्थर के दो विशाल हाथी बने हैं। इन पर महावत भी प्रस्थित है। मन्दिर में पाषाण निर्मित जालियों का प्रयोग भी हुआ है। गर्भगृह का शिखर बेसर शैली का है।

इस मन्दिर के प्रवेश द्वार के ठीक उपर बारादरी एवं नक्कारखाना बना हुआ है। बारादरी की पत्थर की दीवारों पर अत्यन्त कलात्मक बेलबूटों के अलंकरण है। मन्दिर के अग्रभाग में दोनों कोनो पर दो विशाल बुर्जन्दा छतरियाँ बनी हुई हैं।

प्रवेशद्वार के अन्दर प्रवेश करते ही विस्तृत आंगन में दायें और बायें, दो सहमन्दिर हैं। बाईं और पतालेश्वर महादेवजी का मन्दिर है, जिसमें लगभग चालीस पचास फीट की गहराई में शिवलिंग स्थापित है। आंगन में ही धवल संगमरमर का एक तोरणद्वार भी बना हुआ है जिस पर सुन्दर बेलबूटे उत्त्कीर्ण हैं।

मन्दिर के जगमोहन या मण्डप के चारों ओर कृष्ण तथा राम की लीलाएं चिताकर्षक चित्रों के माध्यम से अलकृत हैं। मन्दिर का प्रदक्षिणा पथ साधारण है लेकिन सभी दीवारें भित्ति चित्रों से अलंकृत हैं। इसमें सभा मण्डप के स्तम्भ ओसियां शैली के हैं।

मण्डल में ही गरुड़, गणेश, हनुमान, मीरां और नामदेव की मूर्तियां विराजमान हैं। ये सभी मूर्तियां धवल संगमरमर की बनी हैं।

मन्दिर में निजमन्दिर अथवा गर्भगृह का प्रवेश द्वार चांदी के पत्तर का बना हुआ हैं। इसके चारों ओर संगमरमर के सुन्दर बेलबूटें उकेरे गये हैं। इसके चारों ओर सोने की कलम का काम है। गर्भगृह पूरा संगमरमर का बना हुआ है।

महाराजा द्वारा निर्मित श्री बालकृष्णजी, श्रीमहाप्रभुजी, श्रीमदनमोहनजी के मन्दिर चतुर्भुज आकार में है। इन नन्दालयों को देखने से ऐसा नहीं लगता कि ये कोई मन्दिर है। वस्तुतः ये उपासना स्थल हैं। इसीलिए परम्परागतरूप से इन्हें घर अथवा हवेली कहा जाता है। इन हवेलियों की दिनचर्या पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय के शुद्धाद्वैत दर्शन के आधार पर संचालित होती है अर्थात्

यहाँ की दिनचर्या [illegible] आरम्भ होती है और [illegible] होती है। इन [illegible] आराध्यदेव के सम्मुख [illegible] हेतु रखे जाते हैं। ये [illegible] अनुरूप होते हैं। प्रत्येक झांकी के [illegible] का श्रृंगार और उपकरण आदि झांकी के [illegible] के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के [illegible] झांकी के समय कीर्तनियों द्वारा [illegible] वाद्ययन्त्रों का प्रयोग किया जाता है [illegible] झांकी के लिए नियत विशिष्ट गीत गाये [illegible]

इन देवालयों में सामान्य पूजन के अतिरिक्त उत्सवों और पर्वों का आयोजन भी होता है। जन्माष्टमी, गोवर्धन पूजा, शरदपूर्णिमा [illegible] मुख्य हैं। श्रीकृष्ण का जन्मदिन [illegible] अत्यधिक श्रद्धा, सम्मान और हर्षोल्लास से [illegible] इस दिन श्रीनाथजी का श्रृंगार भव्य और [illegible] होता है। गोवर्धन पूजा के दिन अन्नकूट [illegible] अपनी विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है। इस दिन [illegible] प्रकार के व्यंजन भगवान के भोग लगाये [illegible] नाथद्वारा स्थित श्रीनाथजी के मन्दिर में [illegible] चावलों का ढेर भीलों की लूट के लिए रखा [illegible] भील लोग इनको अत्यधिक श्रद्धा से लूट [illegible] जाते हैं और इस महाप्रसाद को अपने रिश्तेदारों [illegible] तक पहुंचाते हैं।

इस सम्प्रदाय के उत्कर्ष का प्रभाव केवल स्थापत्य [illegible] तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि इसने मूर्ति [illegible] शिल्पकला की परम्परा एवं चित्रकला को भी [illegible] किया। इस समय चित्रकला की विभिन्न शैलियां [illegible] श्रीनाथजी और गुसांईयों के चित्र चित्रित हुए। [illegible] और ब्रज से आये चित्रकारों ने श्रीनाथजी के [illegible] तथा कष्ण लीलाओं के अनेक चित्र बनायें। इन [illegible] की पृष्ठभूमि में आम, केले, कदम्ब आदि के पेड़ [illegible] गायों का मनोरम अंकन आकर्षक है। इन सभी [illegible] पर नाथद्वारा शैली का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता [illegible]

इसके अतिरिक्त वल्लभ मन्दिरों और हवेलियों [illegible] दीवारों पर श्रीनाथजी, यमुनास्नान, [illegible] शरदपूर्णिमा, दानलीला, रासलीला, [illegible] गोपाष्टमी, जलविहार तथा मंगला श्रृंगार, [illegible] राजभोग, अस्थापन्न, भोग, सन्ध्या शयन [illegible] भाव-भंगिमाएँ चित्रित की गई है।

वल्लभ सम्प्रदाय के कारण जोधपुर राज्य में [illegible]

चित्रशैली का भी जन्म हुआ। पिछवई का अर्थ ऐसे चित्रों से है जो कपड़े पर बनाकर श्रीनाथजी की प्रतिमा के पीछे दीवार पर लगाते है। इन चित्रों को लगाने से उत्सवों और मौसम के अनुकूल मनाये जाने वाले विविध कार्यक्रमों का वातावरण बन जाता। श्रावण में सर्वोत्तम पिछवई चित्रों को लगाया जाता है। इसका उद्देश्य उत्सवों की शोभा बढ़ाना और भक्तों का मनमोह लेना था।

वल्लभ सम्पदाय के उत्कर्ष ने तत्कालीन समाज के साहित्य को भी पल्लवित किया। इस समय समाज में प्रकाश करने वाले सन्तों के द्वारा आराध्य देव की स्तुति में गाये जाने वाले भजन, गीत, पवाड़ों आदि से एक विशाल एवं समृद्ध साहित्य का निर्माण हुआ वहीं दूसरी ओर तत्कालीन महाराजा ने विद्धानों को प्रश्रय दिया। इन विद्धानों ने गद्य और पद्य में विशाल साहित्य का सृजन किया। इस समय अनेक फुटकर छन्द, दोहे, सवैये, कविता और गीत भी लिखे गये जिनमें पुष्टिमार्गीय शुद्धाद्वैतवाद का सम्यक प्रतिपादन और दिग्दर्शन हुआ है।

महाराजा विजयसिंह की मृत्यु के साथ ही जोधपुर राज्य में वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव धीरे-धीरे शिथिल हो गया। महाराजा के उत्तराधिकारी भीमसिंह के समय राज्य में धर्मसमभाव बना रहा लेकिन उनके है उत्तराधिकारी महाराजा मानसिंह के समय राज्य में नाथों का प्रभाव पराकाष्ठा पर पहुंच गया। फलस्वरूप राज्य और राज्य में वल्लभ सम्प्रदाय की स्थिति गौण हो गई।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र में यह बताना चाह रही हूं कि किस प्रकार राजनीति को धर्म प्रभावित करता है। इस शोधपत्र में मैंने तत्कालीन शिल्पसौन्दर्य मूर्तिकला और चित्रकला की शैलियों के विकास को बताने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

महाराजा विजयसिंह के समय जोधपुर राज्य की राजनीति, सामाजिक जीवन पर वल्लभ सम्प्रदाय का अत्यधिक प्रभाव था। इस समय महाराजा ने रेखबाव नाम नया कर लगाया जिससे सामन्त व प्रजा में असन्तोष बढ़ गया। वल्लभ सम्प्रदाय के उत्कर्ष ने कला और साहित्य के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जोधपुर राज्य की ख्यात*
2. *मारवाड़ सेन्सस रिपोर्ट - भाग 2 (1891)*
3. *श्यामलदास - वीर विनोद, भाग द्वितीय*
4. *देरेऊ - मारवाड़ का इतिहास, खण्ड 2*
5. *ओझा - जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग 2*
6. *महाराजा विजयसिंह की ख्यात (प्राच्य प्रतिष्ठान केन्द्र द्वारा प्रकाशित)*
7. *बारहठ शिवदतदान - जोधपुर राज्य का इतिहास*
8. *पेमाराम - मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन*
9. *नैणसी - मारवाड़ रे परगनों री विगत, भाग प्रथम*
10. *टाड (हिन्दी अनुवाद) ठकुर - राजस्थान का इतिहास*
11. *आसोपा - मारवाड़ का मूल इतिहास*